

ॐ श्रीलक्ष्मीनाथ परायणनमः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीनाथपरायणनमः ॥ अथुनादेवि वक्ष्या-
 मिलाक्ष्मीनाथपरायणनमः ॥ हृदयमन्त्रं गमयतामः सत्तुष्टिकारकम् ॥ १ ॥
 तत्पाठे कवचं पुनः पठितव्यं विशेषतः ॥ वंधुत्वा भगवान्देव प्रसीदति परः प्र-
 मान ॥ २ ॥ यस्य धारणमात्रेण पुद्गलाविष्णुं महेश्वरः ॥ कवचं स्यात्सुभ-
 गे कंधिगेयं मुनिः शिवः ॥ ३ ॥ त्रिष्टुप्पन्दो देवता च लक्ष्मीनाथपरायणम-
 तः ॥ रमाबीजं पराहाति स्मार्त्तं कीलकमीयति ॥ ४ ॥ भोगापवर्गसिद्धिं
 र्थं विनियोगः प्रदीयति ॥ ध्यानं ॥ पूर्णोन्दुवदनं पीतवसनं वनमालिन-
 म् ॥ लक्ष्मीं श्रितं चतुर्वर्गं लक्ष्मीनाथपणं भजे ॥ ५ ॥ ॐ वासुदेवो वा-
 गुमेव सारं मे शिरोरुहम् ॥ ह्रीं लकारं सदा पातु लक्ष्मीं विद्याः समन्ता-
 ॥ ६ ॥ ह्रीं नेत्रेऽवतारं लक्ष्मीं गोविन्दं सार्वभौमम् ॥ ह्रीं नासा सर्वदा-
 पातु लक्ष्मीं दामोदरं पुम् ॥ ७ ॥ श्रीमुखं सर्वदा पातु देवो लक्ष्मीं विविध-
 मः ॥ लक्ष्मीं हारं सदा पातु देवो लक्ष्मीं जनार्दन ॥ ८ ॥ ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं पातु-
 वक्षो ॐ लक्ष्मीं त्रिपुरेश्वर ॥ ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं पातु कर्णौ ह्रीं लक्ष्मीं गद्गद-
 ध्वज ॥ ९ ॥ लृट् लृट् ह्रीं ह्रीं पातु पृष्ठं ह्रीं लक्ष्मीं नृसींह ॥ १० ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 : पातु नाभिं ह्रीं लक्ष्मीं विष्वक् भवाः ॥ ११ ॥ ह्रीं वक्षो ह्रीं ह्रीं पातु श्री लक्ष्मीं हि-
 र्मादनः ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं पातु शिखं लक्ष्मीं लक्ष्मीं चरः पुम् ॥ १२ ॥ ह्रीं ह्रीं
 पातु कटिं नारायणीं विनायकः ॥ तं ध्येयं पातु भो ह्रीं नमो लक्ष्मीं गगना-
 ॥ १३ ॥ ध्येयं ध्येयं पातु जानुं ॐ ह्रीं लक्ष्मीं भुजः ॥ ध्येयं ध्येयं पातु कूर्च-
 ह्रीं लक्ष्मीं गदाधर ॥ १४ ॥ ह्रीं ध्येयं ध्येयं पातु गुल्फौ ह्रीं श्री लक्ष्मी-
 रथाङ्गभर ॥ लं ह्रीं पादौ सदा पातु लक्ष्मीं नाथपरायणमः ॥ १५ ॥ स-
 र्वत्र सर्वदा पातु लक्ष्मीं नाथपरायणं पुम् ॥ इति दक्षिणं दिवं देवाना-
 मपि पुनर्भम् ॥ १६ ॥ लक्ष्मीं नाथपरायणं पुनः चतुर्वर्गं पूज्युदम्

॥ सर्वलोभापनिवर्तनं सर्वसारस्वतपुदम ॥ १६ ॥ पठित्वा हृदये ध्यात्वा
लक्ष्मीनाम्नयणं पुनश्च ॥ स्पष्टाक्षरेण भक्त्या तु ततो वै हृदये पठेत् ॥ १७ ॥
ॐ त्र्यम्बक्यो लक्ष्मीनाम्नयणं हृदये लोत्रमन्त्रस्य शिवकृषिः त्रिष्टुप्
न्दः श्री लक्ष्मीनाम्नयणे देवता श्रीं विरुद्धौ शक्ति ॐ श्री लक्ष्मीं ध्यात्वा
मार्थमोक्षासिद्धयर्थं जपेत्तु नियोगः ॥ १८ ॥ ध्यात्वा ॥ ॐ शिवकृष्ययनम
। शिरसि ॥ त्रिष्टुप् हृदये ॥ १९ ॥ लक्ष्मीनाम्नयणं देवतायेनम
॥ हृदि ॥ श्रीं वीजं यनम ॥ गुह्ये ॥ २० ॥ शिवकृष्येनम ॥ दादौ ॥ ॐ श्री
लक्ष्मीं यनमः ॥ सर्वार्थं ॥ दान्तास ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीगुह्या यनमः ॥
ह्रीं श्रीं तर्जनी यनमः ॥ ह्रीं श्रीं मध्यमा यनमः ॥ ह्रीं श्रीं अनामिका
यनमः ॥ ह्रीं श्रीं दानिष्ठिका यनमः ॥ ह्रीं श्रीं अक्षयणी यनमः ॥
ॐ श्रीं हृदयादि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं हृदयायनम ॥ ह्रीं श्रीं शिरसे
त्याका ॥ ह्रीं श्रीं शिरसायै वीजम् ॥ ह्रीं श्रीं हृदयायनम् ॥ ह्रीं श्रीं नेत्रे
त्रयाय वीजम् ॥ ह्रीं श्रीं अस्त्राय वीजम् ॥ ॥ ध्यात्वा ॥ विरहिते कराय
लक्ष्मीं मण्डितं पद्मासनं इन्द्रास्य मुखं चतुर्भुजम् ॥ पीताम्बरं शीत
गन्धं चक्रपाणिं पुराणं पुष्पं भजे विभुम् ॥ ११ ॥ चतुरक्षं शत
शोभहारं सुपत्रान्वितं त्र्यम्बकं विन्देत् ॥ १२ ॥ मन्त्राभितमीश्व
रं निविष्टं परमानन्दभयं भजाम्यनन्तम् ॥ १३ ॥ पुराणं यदि
मानवो जपेद्द्वारिपादाम्बुजसिंहेना कलः ॥ १४ ॥ अनुजान्तव्यं धाम या
ति नूनं परमानन्दमयोगतत्त्वम् ॥ १५ ॥ पराविर्जितं यदि जप
ति अनुजपेत्तु विस्मयकान्तः स्मार्तं गमकुरितं मार्गं जित
मयः ॥ भवेत्तद्वैले शानः सत्कुरिषु दावाग्निं स्वर्गनः सुरात्री
भिः साहसं सुरविटपवारी सुरमते ॥ १६ ॥ विविर्जितं यो भजामन्त्रैः
जपेदा नन्दनिर्भरः ॥ आनन्दं हृदये भविता लक्ष्मीनाम्नयणः प्रि
ये ॥ १७ ॥ विभूतिं श्रीं मनुराजतत्त्वं जपेत्तु तान्ने यदि बोधि
वेन्दुः ॥ सुधाति देवा सुरा प्राणिनां हि परं पदं सर्वं सुरैरल

भयमः ॥६॥ भावीज भनः परमार्थतत्त्व सत्यैव रूपं मनसा जपेदा ॥
 सदा मिनी कामरुण प्रवीणो भवेदरीणा गुद दपदारी ॥७॥ रमा
 विजनामा सरपदमयं मन्त्रमुकटं जपेद्यो यात्रा गेहं चरणा पद्मा
 पितं मनः ॥ भवेद्भूमौ लिप्ता रिमशिभाका निवहतः पुमा
 भास्यत्पाद सभारि धरेन्दो विजयवान् ॥८॥ नागपणायेति
 जपेन्मनु योरात्रौ पुभाते परमार्थवीजम् ॥ त्वैवैरी दानान
 लवेरिवाहो भवेत्सगी मिर्गुद दपदारीः ॥९॥ विथं जपेद्यो
 हृदी विथसा विथं धानदाः पुभाते ॥ सामुज्ये लक्ष्मी
 सरिपू निजित्पलमे दू विस्माभितः परामुः ॥१०॥ इति त
 हृदये पुक्तं मूलमन्त्र मयं परम् ॥ पुरायदं वरदेति त्वं तीर्थसा
 धनमुत्तमम् ॥११॥ योगिनां योगदं पुरायं भोगिनां भोग
 वृद्धिभः ॥ रोगिणां रोगहर्तु सर्वदुष्कृत वाशनम् ॥१२॥
 वेश्या वानी प्रियर्त भक्तानां परमार्थदत्त ॥ दितुं हृदयं पुरा
 लक्ष्मीनायकाय ते ॥१३॥ वारितंगोप्प मन्त्रां त्रैगोपनी
 यं स्वयोनिवत् ॥ लक्ष्मीनायकाय देहदयं मन्त्र गभितम् ॥
 १४॥ दशवार् पठेदात्रो रतानो वेश्या वीतमः ॥ स्वप्ने वरपुदं
 पदपे लक्ष्मीनायकाय सुधः ॥१५॥ त्रिधं पठेत्तत्त्वं ह
 दयं भगुरो दितम् ॥ सदाति परं धाम लक्ष्मीनायकाय दि
 तु ॥१६॥ उभक्तापन दातव्यं न चारवे ये मुमुक्षुभिः ॥ १७॥
 इति श्री लक्ष्मीनायकाय हृदयं मन्त्राणि ॥ मुक्ता ॥

॥ १ ॥ ... ॥ २ ॥ ... ॥ ३ ॥ ... ॥ ४ ॥ ... ॥ ५ ॥ ... ॥ ६ ॥ ... ॥ ७ ॥ ... ॥ ८ ॥ ... ॥ ९ ॥ ... ॥ १० ॥ ... ॥ ११ ॥ ... ॥ १२ ॥ ... ॥ १३ ॥ ... ॥ १४ ॥ ... ॥ १५ ॥ ... ॥ १६ ॥ ... ॥ १७ ॥ ... ॥ १८ ॥ ... ॥ १९ ॥ ... ॥ २० ॥ ... ॥ २१ ॥ ... ॥ २२ ॥ ... ॥ २३ ॥ ... ॥ २४ ॥ ... ॥ २५ ॥ ... ॥ २६ ॥ ... ॥ २७ ॥ ... ॥ २८ ॥ ... ॥ २९ ॥ ... ॥ ३० ॥ ... ॥ ३१ ॥ ... ॥ ३२ ॥ ... ॥ ३३ ॥ ... ॥ ३४ ॥ ... ॥ ३५ ॥ ... ॥ ३६ ॥ ... ॥ ३७ ॥ ... ॥ ३८ ॥ ... ॥ ३९ ॥ ... ॥ ४० ॥ ... ॥ ४१ ॥ ... ॥ ४२ ॥ ... ॥ ४३ ॥ ... ॥ ४४ ॥ ... ॥ ४५ ॥ ... ॥ ४६ ॥ ... ॥ ४७ ॥ ... ॥ ४८ ॥ ... ॥ ४९ ॥ ... ॥ ५० ॥ ... ॥ ५१ ॥ ... ॥ ५२ ॥ ... ॥ ५३ ॥ ... ॥ ५४ ॥ ... ॥ ५५ ॥ ... ॥ ५६ ॥ ... ॥ ५७ ॥ ... ॥ ५८ ॥ ... ॥ ५९ ॥ ... ॥ ६० ॥ ... ॥ ६१ ॥ ... ॥ ६२ ॥ ... ॥ ६३ ॥ ... ॥ ६४ ॥ ... ॥ ६५ ॥ ... ॥ ६६ ॥ ... ॥ ६७ ॥ ... ॥ ६८ ॥ ... ॥ ६९ ॥ ... ॥ ७० ॥ ... ॥ ७१ ॥ ... ॥ ७२ ॥ ... ॥ ७३ ॥ ... ॥ ७४ ॥ ... ॥ ७५ ॥ ... ॥ ७६ ॥ ... ॥ ७७ ॥ ... ॥ ७८ ॥ ... ॥ ७९ ॥ ... ॥ ८० ॥ ... ॥ ८१ ॥ ... ॥ ८२ ॥ ... ॥ ८३ ॥ ... ॥ ८४ ॥ ... ॥ ८५ ॥ ... ॥ ८६ ॥ ... ॥ ८७ ॥ ... ॥ ८८ ॥ ... ॥ ८९ ॥ ... ॥ ९० ॥ ... ॥ ९१ ॥ ... ॥ ९२ ॥ ... ॥ ९३ ॥ ... ॥ ९४ ॥ ... ॥ ९५ ॥ ... ॥ ९६ ॥ ... ॥ ९७ ॥ ... ॥ ९८ ॥ ... ॥ ९९ ॥ ... ॥ १०० ॥ ... ॥

H-32

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार